SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

आधुनिक छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिला समाज सेविकाएँ

सीमा पाल, Ph.D., इतिहास अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सीमा पाल, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/04/2024
Revised on : -----
Accepted on : 24/06/2024
Overall Similarity : 09% on 15/06/2024

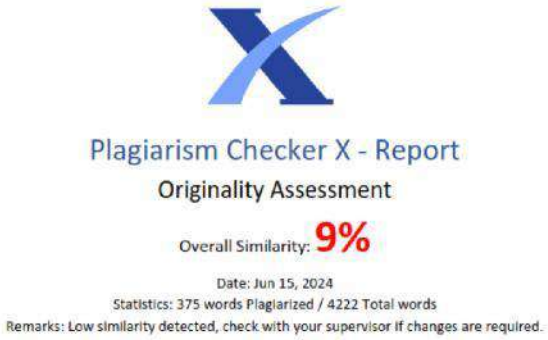

शोध सार

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं संस्कृति को मापने का सबसे सशक्त माध्यम उस राष्ट्र में ''महिलाओं की स्थिति''को माना जाता है। उस राष्ट्र या समाज के द्वारा महिलाओं के प्रति निर्धारित दृष्टिकोण उसका सबसे सशक्त आधार होता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक महिलाओं की दशा में उत्तरोत्तर नित नए परिवर्तन दिखाई देते रहे हैं– बात चाहे विश्व की हो, भारत की हो या फिर अन्य किसी देश की या फिर भारत स्थित छत्तीसगढ़ प्रांत की, उस पर भी यह बात अक्षरश: लागू होती है। छत्तीसगढ़ की नारी की समाज में स्थिति लगभग वैसी ही रही है, जैसी कि भारत के किसी अन्य क्षेत्र के समाज में रही अर्थात् छत्तीसगढ़ी महिलाओं की समस्याएँ भी कमोवेश वैसी ही है, जैसी कि भारत के अन्य किसी भी महिला समाज की। कहने का तात्पर्य यह है कि हमेशा से ही गरीबी, महिला उत्पीड़न एवं हिंसा अशिक्षा, रूढ़िवादिता तथा अंधविश्वास अन्य की भांति छत्तीसगढ़ में भी विद्यमान रहे हैं, लेकिन कन्याभ्रूण हत्या मामले में छ.ग. भारत के अन्य राज्यों से पीछे है। छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता से पूर्व एवं पश्चात् महिला उत्थान के अनेक प्रयास हुए हैं। सभी महिला समाज सुधारकों द्वारा स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया, ताकि महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा मिल सके। डॉ. राधाबाई, मिनीमाता (मीनाक्षी देवी), रानी पद्मावती देवी, राज मोहिनी देवी, सरस्वती दुबे, कु. नाज खान, शमशाद बेगम आदि महान नारियों ने छ.ग. में नारी उत्थान के भर सक प्रयत्न किए हैं।

मुख्य शब्द

समाज, छत्तीसगढ़, महिला, स्थिति, सेवा.

प्रस्तावना

सन् 1854 में जब छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई ,तब यहां की स्थिति में निश्चित रूप से नया परिवर्तन आया। अनेक वर्षों से अव्यवस्थित शासन के बाद, यहां पहली बार व्यवस्था की स्थापना हुई। संचार एवं आवागमन के साधनों के विकास के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ भी देश के अन्य भागों के संपर्क में आया। इसके कारण यहां की सभ्यता और संस्कृति में नवीन परिवर्तन दिखाई पड़े। ब्रिटिश शासन काल में यहां अंग्रेजी शिक्षा का बीजारोपण हुआ। अंग्रेजी शिक्षा और पाश्चात्य संस्कृति का चारों ओर प्रचार –प्रसार होने लगा तथा छत्तीसगढ़ के लोगों को सामाजिक कुरीतियां व अंधविश्वास स्पष्टतः दृष्टिगत होने लगे। परिणामस्वरूप, पुनर्जागरण और सामाजिक तथा धार्मिक सुधारो का युग प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ सामाजिक रूढ़ियों की बेड़ियों से मुक्त होने लगा। सती प्रथा, शिशु हत्या, बाल विवाह और बहु विवाह आदि बुराइयों को समाप्त करने की प्रेरणा मिली। समाज सुधार आंदोलन के फलस्वरुप छत्तीसगढ़ की बहुसंख्यक दलित जातियों में भी नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ, साथ ही चेतना जागी महिलाओं में। महात्मा गांधी के अनुसार– ''हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है, तो वे स्त्रियां ही है और इस वजह से हमारा अधःपतन भी हुआ है। स्त्री–पुरुष के बीच जो फर्क प्रकृति के पहले है और जिसे खुली आंखों से देखा जा सकता है, उसके अलावा मैं किसी किस्म के फर्क को नहीं मानता।'' गांधी जी ने स्त्रियों को देश की लड़ाई के साथ जोड़कर, साथ ही आश्रम में उनको समान हक प्रदान कर समाज में स्त्रियों का दर्जा कैसा होना चाहिए, इसकी अच्छी मिसाल कायम की है। गांधी जी ने ऐसा वातावरण निर्मित करने का प्रयास किया, जिसमें स्त्री, घर के अंदर जिस आत्मविश्वास से काम करती है, उसी आत्मविश्वास से घर के बाहर की जिम्मेदारी भी उठा सके।

शोध का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक छत्तीसगढ़ में नारी उत्थान के क्षेत्र में सक्रिय महान नारियों का अध्ययन करना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु विषय से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से जानकारी ली गई हैं। विषय से संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, शोध प्रबंधों का अध्ययन एवं अवलोकन भी किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

1. **केयूर भूषण**[1] छत्तीसगढ़ के नारी रत्न में केयूर भूषण ने छत्तीसगढ़ राज्य एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य करने वाली सोलह प्रमुख नारियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से लिखा है।
2. **पंकज सिंह**[2] ने छत्तीसगढ़ समग्र में छत्तीसगढ़ राज्य की संपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की है। छ.ग. के आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पहलुओं की विस्तृत जानकारी एवं छ.ग. के महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जानकारी उपलब्ध कराई है।
3. **कामती सिंह परिहार**[3] के छत्तीसगढ़ में महिलाओं की दशा–एक ऐतिहासिक विश्लेषण नामक शोध प्रबंध के तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय में छत्तीसगढ़ की महिला समाज सुधारकों द्वारा किए गए कार्यों का विवरण मिलता है। चतुर्थ अध्याय में उन्होने छत्तीसगढ़ की सामाजिक क्षेत्र से जुड़ी महिला सुधारकों का उल्लेख किया है–मिनीमाता, माता राजमोहिनी देवी, रानी पद्मावती देवी, मारग्रेट दास, फूलबासन यादव, नाज खान, शमशाद बेगम, बिनी बाई सोनकर आदि की सविस्तार जानकारी प्रस्तुत की है। इसमें उन्होंने बताया कि संग्रह की प्रवृत्ति लगभग सब में पाई जाती है, जो स्वाभाविक है, परंतु दान वृत्ति बहुत ही कम लोगों में मिलेगी, जो पर पीड़ा से द्रवित होकर अपना संचय किया हुआ सब कुछ दूसरों को अर्पित कर देते हैं। इसकी मिसाल नगर माता बिन्नी बाई सोनकर के रूप में सामने आती है, जिन्होने लगभग संपूर्ण संपत्ति जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अस्पताल रायपुर को वहाँ धर्मशाला बनाने के लिए दान स्वरूप दे दी।
4. **संजय त्रिपाठी, एवं चंदन त्रिपाठी**[4] छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ में छत्तीसगढ़ राज्य की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है। छत्तीसगढ़ का इतिहास, छ.ग. निर्माण की पृष्ठ भूमि से लेकर उसकी अर्थव्यवस्था, खेल, संस्कृति,

पर्यटन सभी का विवरण है। इसमें छत्तीसगढ़ की महान हस्तियों एवं व्यक्तित्व की जानकारी के अंतर्गत लेख से संबंधित मात्र डॉ. राधाबाई एवं मिनीमाता के विषय में ही जानकारी प्राप्त हो सकी।

5. **प्रो. आभा रूपेंद्र पाल**[5] ने अपने शोध–लेख में छत्तीसगढ़ में 'गांधीवादी आंदोलन और महिलाएँ' विषय पर छत्तीसगढ़ की महिलाओं द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी निभाने वाली अनेक महिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिला सत्याग्रहियों का उल्लेख किया है। उन्होने डॉ. राधाबाई का भी विस्तृत विवरण दिया है। अपने लेख में प्रो. पाल ने बताया है कि गाँधीजी ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को तय किया। परिवार के कार्यो से मुक्त होने के बाद का समय वे गाँधीजी के असहयोग आंदोलन के रचनात्मक कार्यक्रमों में दे रही थी। पुरूषों की तरह वे भी घर–घर जाकर खादी व स्वदेशी का प्रचार कर रही थी और घर पर सूत कातती थी। हरिजनोद्धार का कार्यक्रम रायपुर नगर में राधाबाई द्वारा संचालित किया गया। हरिजन सेवा के इस कार्य में उनका सहयोग दिया डॉ. खूबचंद बघेल की माता केतकी बाई ने। ये स्त्रियाँ प्रायः हर गाँव में जाकर वहाँ की महिलाओं की बैठक बुलाकर जनजागरण का कार्य करती थीं।
6. **विनोद कुमार जाँगड़े**[6] द्वारा छत्तीसगढ़ में सुधार आंदोलन–एक ऐतिहासिक विश्लेषण (सन् 1900 से 1950 ई. तक) विषय पर शोध प्रबंध के अध्याय चार में छत्तीसगढ़ के समाज सुधार आंदोलन में महिला समाज सुधारकों एवं उनके कार्यों का विवरण दिया गया है। इसमें डॉ. राधाबाई, माता राजमोहिनी देवी एवं मिनी माता के समाज सुधार कार्यों की जानकारी मिलती है।

विषय प्रवेश

छत्तीसगढ़ की सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को अतीत से लेकर वर्तमान काल तक रेखांकित करते समय यह आभास मिलता हैं कि यहाँ समय–समय पर विभिन्न समाज सुधारकों–कबीर पंथियों एवं सतनाम पंथियों ने जात–पात तथा लिंग भेद को दूर कर सामाजिक समरसता स्थापित करने का प्रयास किया। साथ ही साथ महिलाओ की दशा सुधारने के भी प्रयत्न किए। छत्तीसगढ़ में नारी उत्थान का सर्व प्रथम प्रयास सतनाम पंथ द्वारा किया गया। सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरू घासीदास थे, जिन्होने समाज में स्त्रियों के समान अधिकारों की वकालत की थी।[7]

स्वतंत्रता से पूर्व एवं बाद में भी छत्तीसगढ़ में शिक्षा का सीमित प्रसार होने के कारण यह तांत्रिकों का गढ़ रहा, इसलिए हर शुभ और महत्वपूर्ण कार्य के आरंभ में तंत्र–मंत्र, पूजा–अर्चना की अवधारणाएँ जुड़ी हुई है। यहाँ महिला–पुरूष, वृक्ष अथवा पशुओं के ही नही बल्कि तालाबों के विवाह भी प्रचलन में है। भैंसासुर की पूजा, खेतों की सुरक्षा के लिए की जाती है। शिक्षा के अप्रसार के कारण तंत्र–मंत्र, का प्रभाव महिलाओं पर अधिक है। इसलिए हर समस्या का समाधान तंत्र–मंत्र, जादू–टोने, टोटके में ढूँढने का प्रयास किया जाता है। तंत्र विद्या जानने वाली महिलाओं को यहाँ 'टोनही' की उपमा दी जाती है और गाँव की जिस महिला को 'टोनही' घोषित किया जाता है उसे अत्यधिक प्रताड़ित किया जाता है। स्वतंत्रता से पहले प्रचलित रूढ़ियाँ एवं मूढ़ मान्यताएँ शिक्षा के प्रकाश से धीरे–धीरे दूर होती जा रही है। टोनही जैसी अंधविश्वास आधारित सामाजिक कुरीति से महिलाओं को समय–समय पर मिलने वाली प्रताड़ना को गंभीरता से लेते हुए छत्तीसगढ़ सरकार ने वर्ष 2005 में राज्य में "टोनही प्रताड़ना निवारण अधिनियम" लागू किया है। इसके अंतर्गत महिलाओं को प्रताड़ित करने वालों पर अंकुश लगाने के लिए जुर्माने के साथ अधिकतम पाँच वर्ष के कारावास की सजा का प्रावधान किया गया है।[8]

छ.ग. के समाज में महिलाओं से संबंधित कुरीतियों के प्रति जागृति फैलाने एवं इन कुरीतियों को दूर करने का प्रयास स्वयं महिला नेत्रियों द्वारा किया गया। 19वीं सदी के भारतीय सामाजिक–धार्मिक पुनर्जागरण का प्रभाव छत्तीसगढ़ पर भी पड़ा। नारी उत्थान के प्रयास महिला एवं पुरूष समाज–सुधारकों दोनों द्वारा किए गए। इस शोध पत्र में 20वीं सदी में छत्तीसगढ़ की प्रमुख महिला समाज सुधारकों का उल्लेख निम्न प्रकार से प्रस्तुत है:

डॉ. राधाबाई

छत्तीसगढ़ की मिट्टी को अपने तन–मन–धन से सिंचित करने वाली राधाबाई का जन्म मध्य प्रांत एवं बरार

की राजधानी नागपुर में सन् 1875 को हुआ था। इस समय भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन का उत्कट क्षण था, महाराष्ट्र में परिवर्तनकारी विचारों के साथ राष्ट्रीय चेतना जागृत हो रही थी। एक ओर ब्रम्ह समाज के प्रचारक, प्रार्थना समाज, परमहंस मंडली जैसी संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर रहे थे, वही दूसरी ओर आर्य समाज तथा ज्योतिबा फुले का सत्य शोधक समाज भी भारत के सामाजिक, शैक्षिक व्यवस्था को सुधारने में लगे थे। इतना ही नही, देश के दुर्गम क्षेत्रों में कृषक विद्रोह एवं जनजातिय आंदोलन की ज्वाला भी सुलग रही थी। अतः राधाबाई पर भी समकालिन परिवेश का प्रभाव पड़ा।[9]

राधाबाई का बाल विवाह हुआ था। वह 09 वर्ष में ही विधवा हो गई थी। माता–पिता का साया भी सर से उठ चुका था। वह बचपन में ही इन पीड़ा कष्टों से जुझते हुए परिपक्व हो गई थी। उनमें बाल विवाह, विधवा विवाह प्रतिबंध, पर्दाप्रथा, जाति प्रथा जैसी सामाजिक कुप्रथाओं के प्रति चेतना जागृत हो चुकी थी। अतः इन कुप्रथाओं का उन्होने जीवन भर प्रतिकार किया। उनमें मानव सेवा एवं देश सेवा की भावना कूट–कूटकर भरी हुई थी। उनमें न तो अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष की भावना थी और न ही उच्च पद–प्रतिष्ठा प्राप्ति का लोभ था। वह खादी वस्त्र धारण करती थी और दूसरों को भी इस दिशा में प्रेरित करती थी।

राधाबाई एक मिड वाइफ थी जो 1920–30 के दशक में समाज सेविका के रूप में इतनी सफल हुई, इतनी लोकप्रियता हासिल की कि लोग उन्हे प्यार और आदर से डॉ. राधाबाई बुलाने लगे। रायपुर नगर में हरिजन उद्धार कार्यक्रम का संचालन राधाबाई द्वारा किया गया।[10] छत्तीसगढ़ में राजनीतिक कार्यों हेतु प्रशिक्षण का कार्य भी डॉ. राधाबाई द्वारा किया गया–प्रभात फेरी, धरना प्रदर्शन– ये सारे कार्य महिलाएं स्वयं करती थी, अधिकांशतः नेतृत्व क्षेत्र के प्रमुख नेता और सत्याग्रहियों की पत्नियाँ या माताएँ करती थी, जबकि राधाबाई एक ऐसी महिला सत्याग्रही थी जिन्होंने अपनी स्वतंत्र पहचान बनाई थी। प्रो. आभा रूपेंद्रपाल ने अपने शोध लेख में लिखा भी है कि" रायपुर की प्रसिद्ध समाज सेविका डॉ. राधाबाई को यह महसूस हुआ कि जब भारत को ब्रिटिश प्रशासन के चंगुल से मुक्ति मिलेगी तब रायपुर वासियों को सहज सुख और शांति का अनुभव हो सकेगा। डॉ. राधाबाई के उत्साह से छ.ग. में सत्याग्रही बहनों का एक जत्था तैयार हुआ जिसमें सुप्रसिद्ध समाज सेवी डॉ. खूबचंद बघेल की वृद्ध माँ केतकी बाई, फूलकुंवर बाई, रूखमणी बाई, रोहिणीबाई परगनिहा, जमुना बाई आदि थीं। राधाबाई पिकेटिंग करते हुए गिरफ्तार कर ली गई।[11] छत्तीसगढ़ में सत्याग्रहियों के चार प्रमुख केन्द्रों में से एक केंद्र था–रायपुर नगर में तात्यापारा स्थित डॉ. राधाबाई का घर, जहाँ पर सत्याग्रह की योजनाएं बनाई जाती थी। ये महिलाएं घर–घर जाकर खादी वस्त्र बेचती, लोगों को सूत कातना एवं चरखा चलाना सिखाती थीं, वहीं विदेशी वस्त्रों एवं आभूषणों के परित्याग के लिए प्रेरित किया करती थी। इन समाज सेविकाओं ने एक ओर जहाँ दहेज प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध किया, वहीं विधवा विवाह का समर्थन भी किया। इतना ही नही महिलाओं को घर की चार दीवारी से बाहर निकाल कर सामाजिक बंधनों की सीमा को लाँघते हुए उन्हे देश की पहरेदार बनाने का सफल कार्य किया।

राधाबाई सेवादल की प्रमुख सेविका थीं। उनके नेतृत्व में मद्य निषेध हेतु काफी सराहनीय प्रयास किए गए। गाँधीजी ने महिलाओं को हिरावल दस्ते के लिए तैयार किया जो शराब की दुकानों के सामने विरोध एवं धरना प्रदर्शन (पिकेटिंग) करती थी, परिणामस्वरूप शराबियों एवं शराब कारोबारियों का धंधा ही चौपट हो गया था।[12] डॉ. राधाबाई ने समाज में व्याप्त वैश्यावृत्ति जैसी कुरीति को भी समाप्त करने का प्रयास किया। सामन्तीय एवं जमींदारी शासन के चलते यह प्रवृत्ति छत्तीसगढ़ के कई क्षेत्रों में प्रचलित थी जिसका एक रूप" किसबिन नाचा" था। इस कार्य के लिए बालिकाओं को माता–पिता द्वारा भी प्रोत्साहित किया जाता था। ऐसी बालिकाओं के अंधकारमय जीवन को प्रकाशमय बनाने हेतु डॉ. राधाबाई ने भरसक प्रयत्न किए। उनके प्रयत्नों से सबसे पहले इस कुप्रथा की समाप्ति खरोरा में हुई। अब इस कार्य में संलग्न परिवार कृषि एवं मजदूरी करके जीवन–यापन करने लगे है।

डॉ. राधाबाई हिंदू–मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत पर चलते हुए विभिन्न त्यौहारों में अपनी सहज और सकरात्मक प्रवृत्ति का परिचय देती थीं। उन्होंने मुस्लिमों के प्रति प्रेम और आदर की भावना विकसित करने हेतु भाई–दूज के अवसर पर मुस्लिम भाईयों को रक्षा सूत्र व तिलक लगाने की परंपरा का निर्वाह किया।

मिनीमाता (मीनाक्षी देवी) (छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद)

छत्तीसगढ़ की अग्रणी समाज सेविकाओं में से एक मिनीमाता ने महिलाओं के सामाजिक उत्थान हेतु उल्लेखनीय कार्य किए। यह प्रथम महिला थी जिन्होंने बाल विवाह का घोर विरोध किया एवं ग्रामीण समाज में इस सामाजिक बुराई के खिलाफ जागृति फैलाई। उन्होने अस्पृश्यता निवारण कानून नारी उत्थान मजदूरों के उत्थान एवं छत्तीसगढ़ में उद्योंगों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[13]

मिनीमाता का जन्म सन् 1916 में असम के नवगाँव जिले में हुआ था। उनकी शिक्षा कन्या विद्यालय, नवगाँव एवं रायपुर में हुई थी। पिता का नाम महंत बुधारी दास एवं माता का नाम देवमतीबाई था।[14] इनका मूल नाम मीनाक्षी देवी था। इनका विवाह छत्तीसगढ़ के सतनामी समाज में गुरू अगमदास से हुआ था।[15] गुरू जी पर राष्ट्रीय आंदोलन का बड़ा प्रभाव था, रायपुर स्थित उनके घर पर आजादी के सिपाही ठहरते थे। मीनाक्षी ने घर में आने–जाने वाले बड़े–बड़े नेताओं को जाना पहचाना। इस समय तक छत्तीसगढ़ की बेटियाँ महिलाएं पीछे थी। आजादी की जंग में उनका जुड़ना जरूरी था। मीनाक्षी ने छत्तीसगढ़ की महिलाओं को एक जुट करने का काम किया, उन्हे मान दिलाने का काम किया। सन् 1952 में गुरू अगमदास का निधन हो गया, तब वे संसद सदस्य थे।

पं. रविशंकर शुक्ल की प्रेरणा से मिनीमाता मध्यावधि चुनाव के समय रायपुर से सांसद चुनी गई। देश ने एक गुणी और सेवाभावी सांसद को पाया। पं. जवाहर लाल नेहरू, पं. रविशंकर शुक्ल जैसे शीर्षस्थ नेतागण उनका बड़ा सम्मान करते थे। वे एक कर्मठ महिला थी। उन्होने छत्तीसगढ़ की महिलाओं के लिए राजनीति के द्वार खोले।[16] इन्होने अनेक दलितोंत्थान, समाजसुधार, जात–पात, छुआ–छूत पर सक्रिय भागीदारिता दिखाई। अस्पृश्यता पर इनका काम इतना श्रेष्ठ है कि लोग उन्हे ईश्वर तुल्य मानते थे और दलितों का मसीहा भी कहने लगे थे। अपने इस आंदोलन में उन्हे पं. सुंदरलाल शर्मा, डॉ. राधाबाई, ठाकुर प्यारेलाल का सहयोग समय–समय पर मिलता रहा। नारी शिक्षा के क्षेत्र में मिनीमाता ने बहुत काम किए है। वो हमेशा लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करती थी व अपने सानिध्य में रखकर उनकी शिक्षा पूर्ण कराती थी।[17]

मिनीमाता ने गरीबों, दलितों एवं समस्त वर्गों के जरूरतमंद लोगों की मदद की। उन्होंने "छत्तीसगढ़ मजदूर संघ" का गठन किया था तथा अस्पृश्यता निवारण विधेयक को संसद में प्रस्तुत करवाने में महत्वपुर्ण भूमिका निभाई। वे भारतीय दलित वर्ग संघ की महिला शाखा की उपाध्यक्ष भी थी।[18] 11अगस्त 1972 ई. की अर्धरात्रि में जब वे दिल्ली से रायपुर आ रही थी, तब उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से उनकी मृत्यु हो गयी। वर्तमान में छत्तीसगढ़ के बांगो बाँध परियोजना तथा छत्तीसगढ़ विधान सभा भवन–दोनों का नाम मिनीमाता के नाम पर रखा गया है।

माता राजमोहिनी देवी ''वनदेवी'' (उत्तरी छ.ग., सरगुजा)

वर्तमान बलरामपुर रामानुजगंज के अंतर्गत ग्राम सरदारपुर में माता शीतला देवी और पिता वीर साय टेकाम के घर सन् 1914 में एक पुत्री का जन्म हुआ। गरीब माता–पिता ने उनका नाम रजमन देवी रख दिया। बाद में यही पुत्री राजमोहिनी देवी के नाम से प्रसिद्ध हुई।[19]

राजमोहिनी देवी एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता, गाँधीवादी और बापू धर्म सभा आदिवासी सेवा मंडल की संस्थापक थी जिसकी स्थापना उन्होने 1951 ई. में की थी। यह संगठन छत्तीसगढ़, बिहार एवं उत्तर प्रदेश राज्यों में स्थापित कई आश्रमों के माध्यम से कार्य करता है।[20] उन्होने महिलाओं की मुक्ति के लिए जो आंदोलन चलाया, वह''राजमोहिनी आंदोलन'' के नाम से लोकप्रिय हुआ। इस आंदोलन का मुख्य लक्ष्य आदिवासी महिलाओं के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करना था, साथ ही अंधविश्वास और मदिरापान की समस्याओं का उन्मूलन करना था। इस आंदोलन से धीरे–धीरे करीब 80000 लोग जुड़ गए।[21]

राजमोहिनी[22] देवी ने अपना सारा जीवन छत्तीसगढ़ की माटी की सेवा में अर्पित कर दिया। उन्होने छत्तीसगढ़ में आचार्य विनोबा भावे द्वारा चलाए गए भू–दान आंदोलन का नेतृत्व किया। यद्यपि रजमन का जन्म सरगुजा मे हुआ था लेकिन उनका कार्य क्षेत्र सरगुजा तक सीमित न होकर संपूर्ण छत्तीसगढ़ में विस्तृत था। राजमोहिनी देवी शराब बंदी अभियान चलाने वाली सशक्त गाँधीवादी नेता थी। वह महात्मा गाँधी को अपना आदर्श मानती थी। नई दुनिया,

न्युज डेस्क[23] (अम्बिकापुर) के अनुसार– संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व, रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित ऐतिहासिक संत परंपरा विषय पर दो दिवसीय राज्य स्तरीय शोध संगोष्ठी में अजय कुमार चतुर्वेदी[24] ने अपने शोध पत्र में बताया कि उनके द्वारा लिखी गई माता राजमोहिनी देवी की जीवनी छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक में शामिल की गई है जो कक्षा पाँचवी में वर्ष 2010 से पढ़ाई जा रही है। अजय कुमार चतुर्वेदी के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य के सूरजपुर जिले के प्रतापपुर विकास खंड अंतर्गत जंगलों के बीच और तमोरपिंगला अभ्यारण्य रमकोला के समीप एक आदिवासी बहुल गाँव गोविंदपुर है। वर्ष 1951 में घोर अकाल के समय चारों तरफ त्राहि–त्राहि मची हुई थी। खाने–पीने के लिए कुछ नहीं मिल रहा था। धरती में दरारे फटने लगी थी। ऐसे कठिन समय में एक गरीब किसान परिवार की बिना पढ़ी–लिखी जनजातीय महिला रजमनबाई को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ और वह माता राजमोहिनी देवी बनकर समाज सेवा के क्षेत्र में विख्यात हुई। आज भी गोंड समाज का एक वर्ग उन्हे अपने प्रवर्तक संत के रूप में पूजता है। माता राजमोहिनी के भक्त उन्हे दुर्गा का अवतार मान कर उनकी पूजा करते है। माता जी ने बापू धर्म सभा के माध्यम से गोविन्दपुर मे एक स्कूल भी आरंभ कराया, जिसे वर्तमान में सर्वोदय समिति संचालित करती है। सूरजपुर जिले में भी बापू धर्मसभा चार विद्यालय संचालित कर रही है तथा जय बड़ा देव समिति भी माता राजमोहिनी देवी के नाम से तीन स्कूल संचालित कर रही है।

सूखा, भूखमरी और अकाल जैसे आपदाओं से निपटने के लिए माताजी ने "ग्राम अन्नकोष" की स्थापना की थी। इतना ही नही, शराब व नशाबंदी के लिए ''भट्ठी तोड़ो आन्दोलन''सहित गौ हत्या बंदी आंदोलन, ग्राम दान, भू–दान अभियान, खरचराई, नगराही, अमानवीय कर विरोधी आंदोलन चलाए। माता राज मोहिनी की वेशभूषा अत्यंत साधारण थी–सफेद रंग की हरे या नीले किनारे की सूती साड़ी पहनती थी, बहुत ही साधरण जीवन जीती थी। उन्होंने जीवन पर्यन्त दूर गाँवों में पैदल घूमकर अपने आदिवासी भाई बहनों को संगठित कर गाँधीवादी आदर्शों पर चलने हेतु प्रेरित किया। उन्हे अक्षर ज्ञान नहीं था लेकिन व्यवहारिक ज्ञान ने उन्हे समाज नेता के उच्च शासन पर प्रतिष्ठित कर दिया।[25]

भारत सरकार ने सन् 1989 में माता राजमोहिनी देवी को पद्मश्री (चतुर्थ सर्वोच्च नागरिक सम्मान) से सम्मानित किया। उनके जीवन वृत्त को सीमा सुधीर जिंदल द्वारा लिखित और छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा सन् 2013 में प्रकाशित एक पुस्तक "सामाजिक क्रांति की अग्रदूत–राज मोहिनी देवी"में प्रलेखित किया गया है। एक शोध केंद्र राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय में स्थित है और एक शासकीय कन्या महाविद्यालय राजमोहिनी देवी स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, अंबिकापुर में उनके नाम पर है।

समर्पित सेवा भावना के इतिहास में माता राजमोहिनी देवी ने अपने निःस्वार्थ योगदान से एक नया गरिमामय अध्याय जोड़ा। उनका स्मरण समाज सेवा के क्षेत्र में एक निष्ठावान समाज सेविका के रूप में बड़े आदर और स्नेह से लिया जाता है।[26]

पद्मावती देवी ''प्रदेश की प्रथम महिलामंत्री''

खैरागढ़, इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय के कारण ही प्रसिद्ध हैं। नहीं तो, छत्तीसगढ़ के बाहर खैरागढ़ को जानने वालों कीं सँख्या बहुत कम है। आज संगीत और ललित कलाओं में रूचि रखने वाले खैरागढ़ का नाम बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ लेते है। इस इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना पद्मावती देवी ने की थी। वे खैरागढ़ की रानी थीं। उनके "कमल विलास पैलेस"में इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। संस्कृति के प्रति उनका लगाव इतना गहरा था कि वे एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना कर गई, जो पूरे विश्व में संगीत एवं ललित कलाओं का अग्रणी विश्वविद्यालय माना जाता है।

सन् 1918 में उनका जन्म हुआ था। प्रतापगढ़ (उत्तरप्रदेश) में प्रतापगढ़ के राजा प्रताप बहादुर सिंह की वे छोटी बेटी थीं। राजकुमारी होने के कारण उनकी शिक्षा घर में ही हुई। राजमहल में उन्हे पढ़ाने के लिए भारतीय और अँग्रेजी शिक्षिकाएँ आती थी। सोलह वर्ष की थीं पद्मावती, जब उनकी शादी खैरागढ़ के राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह के साथ हुई।

खैरागढ़ आने के बाद पद्मावती आरंभ से ही समाज सेवा में रूचि लेने लगीं। शुरू से ही वे लड़कियों को पढ़ाने के बारे में सोचने लगी थी। राज भवन में पद्मावती पुस्तकालय की स्थापना महिलाओं एवं लड़कियों को ध्यान में रखकर की गई थी। वहाँ की किताबें वे खुद मँगवाती थीं विभिन्न शहरों से। खैरागढ़ का राजा लाला बहादुर क्लब सप्ताह में एक दिन महिलाओं के लिए आरक्षित था। उस क्लब में उनके लिए बैडमिंटन, कैरम, सिलाई–बुनाई, संगीत की व्यवस्था रहती थी।

इसके अलावा लड़कियों कों घुड़सवारी और बन्दूक चलाने का भी प्रशिक्षण दिया जाता था, खाना बनाना भी सिखाया जाता था। शिवेन्द्र संस्कृत पाठशाला की भी स्थापना की पदमावती देवी ने। इस पाठशाला में काशी की "शास्त्री" परीक्षा के लिए छात्र तैयार कराये जाते थे। जिन छात्रों के पास पैसे नही थे पढ़ने के लिए, उनके लिए वहाँ छात्रवृत्ति की व्यवस्था थी। इसके उपरान्त खैरागढ़ में उन्होने प्रयाग की परीक्षाओं के लिए एक शिक्षा केन्द्र की स्थापना की। वहाँ पढ़ाये जाने वाले विषय विद्या, विनोदनी, विशारद के लिए शिक्षा देने के लिए साहित्यकार स्व. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और दूसरे शिक्षकों की मदद ली जाती थी।

पद्मावती देवी उन लोगों की व्यथा को समझती थीं जिनके पास चिकित्सा के लिए पैसे नही थे। उनके लिए औषधालय चलाया जाता था। उस औषधालय में उन लोगों के लिए औषधि निःशुल्क दी जाती थी, चिकित्सा निःशुल्क की जाती थी।

रानी पद्मावती की सेवा भावना को देखकर बहुत से लोग प्रभावित हुए थे। लोग ये कहने लगे थे कि वे अगर राजनीति के क्षेत्र में आयें तो लोगो के लिए और भी कार्य कर जायें।

सन् 1948 में पं. जवाहरलाल नेहरू और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल ने भी पद्मावती देवी के गुणों को देख उन गुणों से प्रभावित होकर उन्हे राजनीति के क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित किया था। इसके बाद वे मध्यप्रदेश शासन की जनपद सभा खैरागढ़ की प्रथम अध्यक्षा मनोनीत की गई थी।

पद्मावती देवी प्रदेश की प्रथम महिला मंत्री थी। वे 1952 से 1967 तक विधान सभा और सन् 1967 से 1971 तक सांसद (लोकसभा) रही। सन् 1956 से 1967 तक मध्यप्रदेश शासन के लोक स्वास्थ्य समाज कल्याण मंत्री की और नगर निकाय आदि विभागों के मंत्री पद पर रहीं। पदमावती देवी इतनी लोकप्रिय थी कि 1957 के विधानसभा चुनाव में वें वीरेन्द्र नगर से निर्विरोध निर्वाचित हुई थी।

पद्मावती देवी को हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, नेपाली और छत्तीसगढ़ी भाषाओं में पारंगतता थीं। उत्तर प्रदेश से आई थीं छत्तीसगढ़ की बहु बनकर, पर कुछ दिनों के भीतर ही छत्तीसगढ़ी बोलने लगी थीं। वे अपने बोल–चाल के लिए छत्तीसगढ़ी भाषा का ही इस्तेमाल करती थीं। वे भारत वर्ष के लगभग हर प्रदेश का भ्रमण कर चुकी थीं। वे कई बार अमेरिका, रूस, जर्मनी, फ्रान्स, ब्रिटेन, जापान भी हो आई थीं।

वे बहुत से विश्वविद्यालय की आजीवन सदस्या रहीं– जैसे डॉ. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, खैरागढ़ विश्वविद्यालय। इसके अलावा वे बोर्ड ऑफ गवर्नर्स सिंधिया एजुकेशन सोसायटी (ग्वालियर), लेडी अमृत बाईडागा कॉलेज (नागपुर), तानसेन उत्सव समिति (ग्वालियर), मध्यप्रदेश बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, लेडी इर्विन कॉलेज (नई दिल्ली,) भारतीय महिला कान्फ्रेन्स की भी सदस्या रही। अन्तर्राष्ट्रीय समाज सम्मेलन, एथेन्स में जाने वाले भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व रानी पद्मावती देवी ने किया था। 12 अप्रैल, सन् 1987 को इस महान समाजसेवी महारानी पद्मावती देवी का असामयिक निधन हो गया। उस दिन हजारों की तादात् में लोग उनकों श्रद्धा सुमन अर्पित करने उपस्थित हुए थे।[27]

बिन्नी बाई सोनकर

बिन्नी बाई सोनकर ''रायपुर की नगरमाता'', स्त्री सशक्तिकरण का ऐसा सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिन्होने सब्जी बेचकर शिक्षा के क्षेत्र में अपना अपूर्व योगदान दिया है। बिन्नी बाई सोनकर जिन्हे छ.ग. के रायपुर नगर की नगर माता कहा जाता है उन्हे अपने निरक्षर होने का बहुत मलाल था। स्त्री होने एवं गरीबी के कारण पढ़ने से महरूम रहने का गम उन्हे हमेशा कचोटता रहा। उसकी पूर्ति उन्होंने गरीब और जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयास

करके सब्जियाँ को बेच–बेच कर किया। किसी भी शासकीय अनुदान और रहम से उन्होंने स्वयं को दूर रखते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक एवं शैक्षणिक गतिविधियो में लगाया। साथ ही, छ.ग. के रायपुर के भीमराव अम्बेडकर जिला अस्पताल में विशाल धर्मशाला बनवाई, जहाँ गरीब परिवार इलाज हेतु आश्रय ले सकें। स्कूल निर्माण हेतु अपने पूर्वजों की जमीन दान में दी और अपनी जमा पूँजी से स्कूल का निर्माण कराया। आज भी शासकीय माध्यमिक उच्चतर शासकीय स्कूल, भाटागाँव जो कि नगर माता बिन्नीबाई के नाम से है, अभावग्रस्त गरीब बच्चों को बेहतरीन शिक्षा प्रदान कर रहा है।

फूल बासन बाई यादव

फूल बासन बाई यादव छत्तीसगढ़ की एक सामाजिक कार्यकर्ता, गैर सरकारी संगठन माँ बम्लेश्वरी जनहितकारी समिति की संस्थापक है जो छ.ग. की आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ी महिलाओं के विकास के लिए प्रयासरत् संस्था है।

इनका जन्म– 5 दिसंबर, सन् 1969 स्थान–सकुल, देहान, राजनांदगाँव में हुआ। इनका मुख्य कार्य सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करना है।

पुरस्कार– 1. पद्मश्री, 2. मिनीमाता अलंकरण, 3. zeetv अस्तित्व पुरस्कार, 4. जमुनालाल बजाज पुरस्कार, 5. सद्गुरू ज्ञाननंद पुरस्कार।

शमशाद बेगम

आप छत्तसीगढ़ की प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता है। छ.ग. के पिछड़े समुदाय जैसे अ. जनजाति, अनु. जाति व अन्य पिछड़ा वर्ग समुदायों के शिक्षा के लिए प्रयासरत् है। इनका सम्बंध छ.ग. के बालोद जिले से है। सन् 2012 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ की महिलाएँ यूँ तो धर्म भीरू तथा परंपराओं को मानने वाली कर्मठ महिला होती है, जो परंपरागत तरीके से अपने परिवार का पालन–पोषण करती हैं, लेकिन अपने इन्ही पारंपरिक कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए छत्तीसगढ़ की अनेक महिलाओं ने छत्तीसगढ़ का नाम रौशन किया और दूसरी महिलाओं को सम्मान के साथ सर उठाकर जीना सिखाया है। इनमें डॉ. राधाबाई, मिनीमाता, रानी पद्मावती, माता राजमोहिनी देवी, नगरमाता बिन्नीबाई सोनकर, फूलबासन यादव, शमशाद बेगम आदि अनेक नाम आते हैं जिन्होंनें कर्मठता की मिसाल कायम की है। इतना ही नहीं, इन्होंनें महिला स्व–सहायता समूह संगठित कर महिलाओं को उनके श्रम और शक्ति का महत्व समझाया और आत्म–निर्भर बनाया। परिणामस्वरूप केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा संविधान की धाराओं के अंतर्गत बहुत से कानून महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए, महिलाओं के हित में बने हैं जिनकी जानकारी होने पर महिलाएँ अपने हक के लिए आवाज उठाने लगी है और अपना अधिकार प्राप्त कर रही हैं। छत्तीसगढ़ की महिलाएं अर्थोपार्जन में जहां एक ओर पुरूषों का सहयोग कर रही हैं, वही दुसरी ओर सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध भी इन लोगों ने एकजुटता दिखाई है। श्रीमती फूलबासन बाई यादव एवं श्रीमती शमशाद बेगम जैसी सशक्त महिलाओं ने छत्तीसगढ़ की महिलाओं को जागरूक करने का प्रयास ही नही किया है, बल्कि आर्थिक क्षेत्र में स्वावलम्बन की ओर भी प्रेरित किया है। दोनों महिलाओं को भारत शासन द्वारा इस कार्य के लिये पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। श्रीमती फूलबासन बाई यादव को छत्तीसगढ़ योजना आयोग का सदस्य बनाया गया है। ये ''बम्लेश्वरी जनहितकारी समिति'' के माध्यम से पिछड़े जिलों में महिला समूह के विकास हेतु कार्य कर रही है। श्रीमती शमशाद बेगम और फूलबासन बाई यादव की जन्मभूमि व कर्मभूमि ग्रामीण क्षेत्र है इसलिए ये ग्रामीण महिलाओं की समस्याओं को अच्छे से समझती हैं। इनके द्वारा गठित समूहों का उद्देश्य केवल महिलाओं का आर्थिक स्वावलम्बन नही, बल्कि उनके अन्दर से सामाजिक भय को दूर भगाना है। आज स्व–सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को न केवल आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि उनके सशक्तिकरण का मार्ग भी प्रशस्त किया है जिसमें महिला और पुरूष दोनों मिलकर विकास को अंजाम देंगे और निर्माण होगा, एक स्वस्थ समाज का, एक स्वस्थ राष्ट्र का।

संदर्भ सूची

1. भूषण, केयूर (2002) *छत्तीसगढ़ के नारी रत्न,* जनचेतना प्रकाशन ,रायपुर, पृ. 50– 60।
2. सिंह, पंकज (2013), *छत्तीसगढ़ समग्र,* नवबोध प्रकाशन, रायपुर, पृ. 201।
3. परिहार, कामतीसिंह (2015), छत्तीसगढ़ में महिलाओं की दशा–एक ऐतिहासिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,रायपुर (छ.ग.), पृ. 100–350।
4. त्रिपाठी, संजय एवं चंदन (2009), *छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ,* उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ. 464–468।
5. पाल, आभा रूपेंद्र (01 अक्टूबर, 2018), छत्तीसगढ़ में गाँधीवादी आंदोलन और महिलाएं, शोध लेख, https://www.sahapedia.org, Assess on 18 January & 02 February 2024
6. जाँगड़े, विनोद कुमार (2024) छत्तीसगढ़ में समाज सुधार आंदोलन– एक ऐतिहासिक विश्लेषण (1900–1950), अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर (छ.ग.), पृ. 180–250।
7. परिहार, कामती सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 100।
8. कुमार, स्वराज, (8 मार्च, 2011), महिला शक्ति को छत्तीसगढ़ ने पहचाना, *नईदुनिया,* रायपुर, पृ. 2।
9. बौद्ध, अर्चना (2024), इतिहास विषय का अप्रकाशित शोध प्रबंध, छत्तीसगढ़ की सामाजिक क्षेत्र की महिलाएँ– अध्याय VII, पृ. 166।
10. पाल, आभा रूपेंद, पूवोक्त, पृ. 3।
11. वही।
12. बौद्ध, अर्चना पूर्वोक्त, पृ. 168।
13. जाँगड़े, विनोद कुमार पूर्वोक्त, पृ. 234।
14. en.m.wikipedia.org, मिनीमाता अगमदासगुरू, Assess on 02/02/2024.
15. संजू, पूनम, (मार्च, 2021), छत्तीसगढ़ की महिला शक्ति, *गोड़वाना स्वदेश,* रायपुर, अंक–1 पृ 18।
16. परिहार, कामती सिंह पूर्वोक्त, पृ. 206।
17. संजू, पूनम पूर्वोक्त, पृ. 18।
18. परिहार, कामती सिंह पूर्वोक्त, पृ. 207।
19. कुम्भकार, लक्ष्मीनारायण (मार्च, 2021), मूल निवासी महिलाओं के शौर्य को विश्व महिला दिवस पर नमन, *गोंडवाना स्वदेश,* पृ. 12–13।
20. en.m.wikipedia.org, राजमोहिनी देवी Assess on 24/02/2024.
21. Jivani.org, राजमोहिनी देवी की जीवनी Assess on 28/02/2024.
22. सिंह, पंकज पूर्वोक्त, पृ. 210।
23. naidunia.com, (01|03|2021) Nai Dunia News Network–पाठ्य पुस्तक में शामिल है पद्मश्री राजमोहिनी की जीवनी Assess on 28/02/2024.
24. वही।
25. भगत, ए. (04/11/2023) मध्यप्रांत में जनजातीय समाज सुधारक–राजमोहिनी देवी, एजी पीई रॉयल *गोड़वाना रिसर्च जर्नल ऑफ हिस्ट्री, साइंस, इकोनॉमिक, पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस,* 4(4), 34–36.
26. naidunia.com, पूर्वोक्त, Assess on 28/02/2024.
27. http://ignca.gov.in>chgr0010, पद्मावतीदेवी (Indira Gandhi National Centre for theArts) Assess on 01/03/2024.

****